SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

FEBRUARY 2023

(CCCLXXXVIII) 388 D

ENVIRONMENT : ISSUES, CHALLENGES AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT

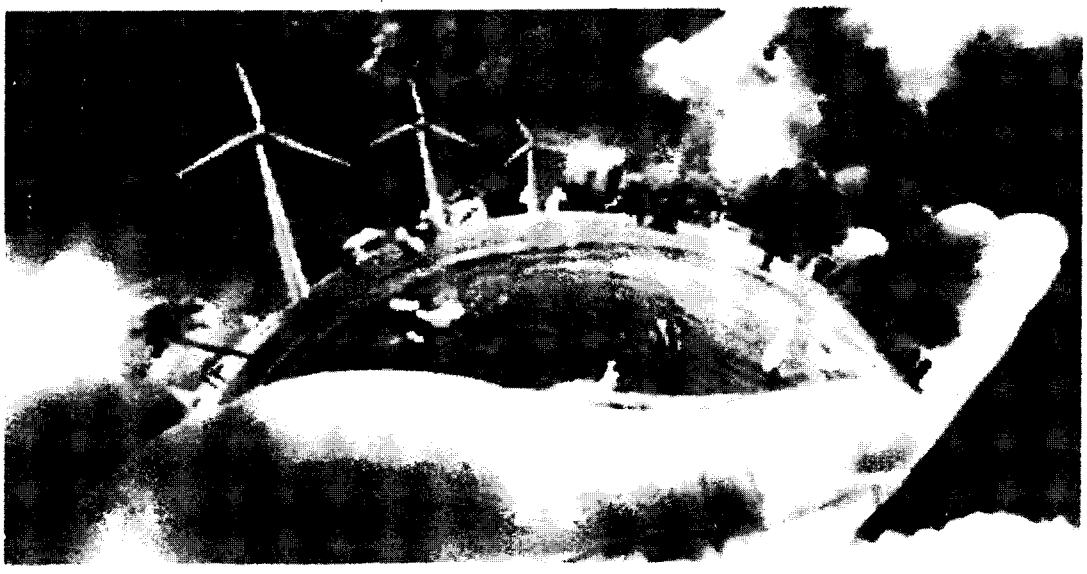

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr.Mukte R.D.
Head Department of Economics.
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

Impact Factor – 8.575 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

FEBRUARY -2023

ISSUE No - (CCCLXXXVIII) 388 -D

ENVIRONMENT : ISSUES, CHALLENGES AND SUSTAINABLE

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development
Training Institute, Amravati.

Dr.Mukte R.D.
Editors ,
Head Department of Economics.
Shivaji College, Hingoli Tq.Dist.Hingoli (MS)

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXVIII.) 388 -D
ISSN : 2278-9308
Fabruary, 2023

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

Editorial Board

Chief Editor -
Prof.Virag S.Gawande,
Director,
Aadhar Social Research &,
Development Training Institute, Amravati. **[M.S.] INDIA**

Executive-Editors -

- **Dr.Dinesh W.Nichit** - Principal, Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, **Walgaon.Dist. Amravati.**
- **Dr.Sanjay J. Kothari** - Head, Deptt. of Economics, G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist. Amravati

Advisory Board -

- **Dr. Dhnyaneshwar Yawale** - Principal, Sarswati Kala Mahavidyalaya , Dahihanda, Tq-Akola.
- **Prof.Dr. Shabab Rizvi** ,Pillai's College of Arts, Comm. & Sci., New Panvel, Navi Mumbai
- **Dr. Udaysinh R. Manepatil** ,Smt. A. R. Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji,
- **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil** , Principal, C.S. Shindure College Hupri, Dist Kolhapur
- **Dr.Usha Sinha** . Principal ,G.D.M. Mahavidyalay,Patna Magadh University.Bodhgay Bihar

Review Committee -

- **Dr. D. R. Panzade,** Assistant Pro. Yeshwantrao Chavan College, Sillod. Dist. Aurangabad (MS)
- **Dr.Suhas R.Patil** ,Principal ,Government College Of Education, Bhandara, Maharashtra
- Dr. **Kundan Ajabrao Alone** ,Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Tal-Daryapur, Dist-Amravati.
- **DR. Gajanan P. Wader** Principal , Pillai College of Arts, Commerce & Science, Panvel
- **Dr. Bhagyashree A. Deshpande**, Professor Dr. P. D. College of Law, Amravati]
- **Dr. Sandip B. Kale,** Head, Dept. of Pol. Sci., Yeshwant Mahavidyalaya, Seloo, Dist. Wardha.
- **Dr. Hrushikesh Dalai** , Asstt. Professor K.K. Sanskrit University, Ramtek

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responicible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers.

- Executive Editor

Published by -
Prof.Virag Gawande
Aadhar Publication ,Aadhar Social Research & Development Training Institute, New Hanuman Nagar,
In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College,Amravati
(M.S) India Pin- 444604 **Email :** aadharpublication@gmail.com
Website : www.aadharsocial.com **Mobile :** 9595560278 /

Principal
Shivaji College, Hingoli
Dist. Hingoli (MS)

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal ISSN : 2278-9308
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXVIII.) 388 -D February, 2023

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

INDEX

No.	Title of the Paper Authors' Name	Page No.
1	जागतिक पर्यावरण संवर्धन काळाची गरज डॉ. अंजली दशरथ काळे	1
2	पर्यावरण बदल आणि राजकीय धोरण प्रा.डॉ.कऱ्हाळे विलास लिंबाजी	5
3	भारतातील पर्यावरणीय चळवळींच्या उदयाची कारणे एक चिकित्सक अभ्यास डॉ. आकाश शेषराव बांगर	7
4	हवामान बदलाचे मानवी आरोग्यावरील परिणाम रवि सिद्धार्थ मोरे	10
5	जागतिक पर्यावरण समस्या व संरक्षण डॉ. मोहन व्यंकटराव बंडे,	14
6	शेतीचा शाश्वत विकास आणि रासायनिक खतांचा संतुलित वापर प्रा.डॉ.पी. डी. जाधव	18
7	शिवकालीन दुष्काळ आणि उपाययोजना डॉ. मोहन मिसाळ	22
8	नागरिकरण आणि पर्यावरण डॉ. विराजदार श्रीमंत महादेव	26
9	हवा प्रदूषण : कारणे व उपाय प्रा.डॉ.संजय काळे	31
10	पर्यावरण व मानवी जीवन डॉ. दिनकर हंबर्डे	34
11	जल प्रदूषण आणि पर्यावरण प्रा.डॉ.संजय पांडुरंग पाटील	38
12	शाश्वत विकासात पर्यावरण नैतिकतेच्या संदर्भात पर्यावरण जागरुकता डॉ. रेश्मा अणवेकर	44
13	महाराष्ट्रातील वाढत्या नागरीकरणाचा पर्यावरणावरील परिणामांचा अभ्यास प्रा. डॉ. पुपलवाड ज्ञानेश्वर	50
14	भारतीय प्राचीन साहित्य और पर्यावरण डॉ.सुनील सो.कांबले	54
15	मानवतावादी मूल्ये रुजविण्यासाठी समर्पित महामानवांच्या कार्याचा जयघोष करणा-या कवी नीलकृष्ण् देशपांडे यांच्या 'महामानव गीतवंदना ' गीत संग्रहाचा चिकित्सक अभ्यास प्रा. अभय सुभाष जोशी	57
16	पर्यावरण आणि नागरीकरण सुदर्शन उत्तमराव ढाले , डॉ. आर. डी. मुक्टे	66
17	हवामान बदल आणि भारतीय शेतीचे व्यवस्थापन प्रा.भरत बाबुराव नागरगोजे	70
18	हवामान बदल व शेती व्यवसायावर परिणाम प्रा. डॉ. शिवाजी अंभुरे	73
19	घनकचरा प्रदूषण व त्याचे व्यवस्थापन प्रा. डॉ.रंजिता डी.जाधव,	76

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXVIII.) 388 -D

ISSN : 2278-9308 February, 2023

COLLEGE HINGOLI

भारतीय प्राचीन साहित्य और पर्यावरण

डॉ.सुनील सो.कांबले

शिवाजी महाविद्यालय,हिंगोली.

प्रकृति और मानव का अटूट संबंध सृष्टि के निर्माण के साथ ही चला आ रहा है। बिना प्रकृति के जीवन की कल्पना ही नही की जा सकती।धरती सदैव ही समस्त जीव-जन्तुओं का भरण-पोषण करने वाली रही है। 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा ।' इन पाँच तत्वों से सृष्टि की संरचना हुई है।भौतिक युग में जहां विकास के नाम पर मानव ने प्रकृति के सुंदर स्वरूप को क्षति पहुंचा पर्यावरण को ही चुनौती देकर अपने जीवन को ही संकट में डाल दिया है।इस स्थिति में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जागरूकता फैलाना अति आवश्यक हो गया है।जहां पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए विश्व में एक दिवस निर्धारित किया गया है जिसे पर्व के रूप में मनाया जाता है। इसी उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। वहीं भारतीय परंपराएँ सनातन काल से ही पर्यावरण को संरक्षित एवं सुरक्षित करने के लिए ही विकसित की गईं थीं। भारतीय संस्कृति सदैव ही प्रकृति और पर्यावरण के महत्व एवं संरक्षण के प्रति सदैव ही जागरूक रही है। पर्यावरण के प्रति अगाध प्रेम व समर्पण की भावना हमारे धार्मिक ग्रन्थोंवेद, पुराणों, उपनिषद, रामायण, रामचरित मानस, महाभारत एवं लोक साहित्य में परिलक्षित होती है।

वैसे पर्यावरण शब्द कोई प्राचीन शब्द नहीं है, अंग्रेजी में इसके लिए इन्वायरमेंट शब्द का प्रयोग किया जाता है। इनवायरमेंट शब्द भी अधिक प्राचीन नहीं है। जर्मन जीव विज्ञानी अर्नेस्ट हीकल द्वारा इकॉलॉजी शब्द का प्रयोग 1869 में किया गया, जो ग्रीक भाषा के ओइकोस (गृह या वासस्थान) शब्द से उद्धृत है। सर्व प्रथम डॉ रघुवीर ने तकनीकि शब्द निर्माण के समय इन्वायरमेंट (फ्रेंच भौतिकी शब्द) के लिए पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया है, वे ही इस शब्द के प्रथम प्रयोक्ता हैं। इससे पूर्व प्राचीन साहित्य में परिधि, परिभू, परिवेश, मण्डल इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

भारत में प्रत्येक भाषा-साहित्य में प्रकृति से जुड़े प्रत्येक तत्वों का बड़ी सूक्ष्मता और सुंदरता के साथ वर्णित करते हुए, उसे देवतुल्य मानकर उसकी उपासना की गई है। यहां पंच महाभूत अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश के साथ ग्रह-नक्षत्र, नदियां, तालाबों, पर्वत, पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं सभी में ईश्वरीय सत्ता को स्वीकारते हुए उनके प्रति आदर-सम्मान की भावना परिलक्षित होती है। भारतीय परंपराओं में पर्यावरण अभिन्न अंग रहा है। प्रत्येक परम्पराओं के पीछे एक वैज्ञानिक तथ्य जुड़ा है।

वेदों को सृष्टि विज्ञान का प्रमुख ग्रंथ माना गया है। वेदों में पर्यावरण संतुलन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी का स्तवन अनेक स्थलों में किया गया है। अग्नि को पिता के समान कल्याणकारी कहा गया है। 'अग्ने। सूनवे पिता इव नः स्वस्तये आ सचस्व' ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि तत्व के स्तवन से होता है। ऋग्वेद मैं जल के महत्व को इस प्रकार बताया गया है- जल में अमृत है,आवश्यकता है जल की शुद्धता, स्वच्छता बनाये रखने की।समग्र पृथ्वी संपूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे, नदी, पर्वत, वन, उपवन सब स्वच्छ रहें, गांव, नगर सबको विस्तृत और उत्तम परिसर प्राप्त हों तभी जीवन का सम्यक विकास हो सकेगा।

यजुर्वेद में यज्ञ विधियां एवं यज्ञ में प्रयोग किये जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ स्वयं एक चिकित्सा है। यज्ञ वायुमंडल को शुद्ध कर रोगों और महामारियों को दूर करता है। अथर्ववेद में आयुर्वेद का अत्यंत महत्व है। अनेक प्रकार चिकित्सा पद्धति एवं जड़ी बूटियां तथा शल्य चिकित्सा व विभिन्न रोगों का वर्णन है। सामवेद में ऐसे मंत्र मिलते है जिनसे ये प्रमाणित होता है कि वैदिक ऋषियों को ऐसे वैज्ञानिक सत्यों का ज्ञान था जिनकी जानकारी आधुनिक वैज्ञानिकों को सहस्राब्दियों बाद प्राप्त हो सकी।वेदों के पश्चात रामायण और रामचरित मानस की बात करें तो महर्षि वाल्मीकि एवं तुलसीदास जी ने मनुष्य के जीवन को सात्विक और सुंदर बनाने के लिए प्राकृतिक पर्यावरण की विशुद्धता पर विशेष बल दिया है तभी मानव जीवन आनंदकारी हो सकेगा। इन्होंने प्राकृतिक अवयवों को उपभोग की वस्तु नहीं मानते हुए समस्त जीवों और वनस्पतियों के बीच अटूट प्रेम सम्बन्ध भी स्थापित किया है।

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXVIII) 388 -D
ISSN : 2278-9308
Fabruary, 2023

तुलसीदास ने वनों की सुंदरता व उपयोगिता के साथ वन्य जीवों के परस्पर संबंध का वर्णन इसप्रकार किया है– फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन,रहहिं एक संग गज पंचानन।खग मृग सहज बयरु बिसराई, सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई।।

पर्यावरण संरक्षण को महत्व देते हुए तुलसीदास लिखते हैं,–रीझि-खीझि गुरुदेव सिष सखा सुविहित साधु।तोरि खाहु फल होई भलु तरु काटे अपराधु।।

अर्थात् तुलसीदास ने वृक्ष से फल खाना तो उचित माना, लेकिन वृक्ष को काटना अपराध माना है।वृक्षारोपण की परंपरा भी स्वाभाविक है जो प्राचीन काल से चली आ रही है।लता ललित बहु जाति सुहाईं। फूलहिं सदा बसन्त की नाईं। रामचरित मानस के सुंदरकांड में लंका के प्राकृतिक सौंदर्य एवं पर्यावरण के सव्यवस्थित स्वरूप का चित्रण इस तरह रामचरित मानस में पर्यावरण के महत्व व संरक्षण के साथ मानव के अटूट संबंध को दर्शाया गया है।

रामायण कालीन ग्रंथों में सजीव-निर्जीव दोनों तत्वों को चेतना सम्पन्न बताया गया है। वाल्मीकि जी ने रामायण में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का वर्णन किया है। ऋषि मुनियों के आश्रम हरियाली युक्त थे जिनमें जीव-जन्तु एवं,पशु-पक्षियों का समूह स्वच्छन्द विचरण करते थे। महाभारत काल में भी मनीषियों ने पर्यावरण की महिमा का गान किया है। भगवान श्रीकृष्ण का बाल्यकाल प्रकृति की गोद में बीता। उन्होंने तो पग-पग पर पर्यावरण संरक्षण के संकेत दिए।

हमारे ऋषि मुनियों ने पृथ्वी का आधार ही जल और जंगल को माना है- "वृक्षाद वर्षन्ति पर्जन्य: पर्जन्यादन्न संभव:"अर्थात वृक्ष जल है ,जल अन्न है ,अन्न जीवन है। जंगल को आनन्ददायक कहते हैं।

सम्राट विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक के शासनकाल में भी वन्य जीवों एवं वनों के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया। आचार्य चाणक्य ने तो आदर्श शासन व्यवस्था के लिए अनिवार्य रूप से अरण्य पालों की नियुक्ति करने की बात कही है। हिन्दू धर्म व जीवन में चार आश्रम निर्धारित हैं जिनमे से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास का सीधा संबंध वनों से माना गया है। वृक्षों को देवता मानकर पूजने से उनका संरक्षण भी हो जाता है। मत्स्य पुराण में वृक्ष की तुलना मनुष्य के दस पुत्रों से की गई है।

ऋग्वेद में वायु के गुण बताते हुए कहा गया है- 'वात आ वातु भेषजं सयोभु नो हृदे, प्रण आयूंषि तारिषत' 'शुद्ध ताजा वायु अमूल्य औषधि है, जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी है, आनंददायक है। वह उसे प्राप्त करता है और हमारी आयु को बढ़ाता है।'

ऋग्वेद में यही बताया गया है -कि शुद्ध वायु कितनी अमूल्य है तथा जीवित प्राणी के रोगों के लिए औषधि का काम करती है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आयुवर्धक वायु मिलना आवश्यक है। और वायु हमारा पालक पिता है, भरणकर्ता भाई है और वह हमारा सखा है। वह हमें जीवन जीने के योग्य करें। शुद्ध वायु मनुष्य का पालन करने वाला सखा व जीवनदाता है।

वृक्षों से ही हमें खाद्य सामग्री प्राप्त होती है, जैसे फल, सब्जियां, अन्न तथा इसके अलावा औषधियां भी प्राप्त होती हैं और यह सब सामग्री पृथ्वी पर ही हमें प्राप्त होती हैं।

अथर्ववेद में कहा है- 'भोजन और स्वास्थ्य देने वाली सभी वनस्पतियां इस भूमि पर ही उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता और मेघ पिता हैं, क्योंकि वर्षा के रूप में पानी बहाकर यह पृथ्वी में गर्भाधान करता है। वेदों में इसी तरह पर्यावरण का स्वरूप तथा स्थिति बताई गई है और यह भी बताया गया है कि प्रकृति और पुरुष का संबंध एक-दूसरे पर आधारित होता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.राजबीर सिन्ह,राजभाषा विभाग निगम, वेदों में पर्यावरण चेतना, भाषा ज्योति
2. पूनम नेगी,पर्यावरण संरक्षण की वैदिक दृष्टि
3. आचार्य गोविन्द बल्लभ जोशी
4. विजयकुमार पॉल,प्राचीन भारतीय ग्रंथ मे पर्यावरण चेतना ,
5. www.socialsciencejournal.in

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

6 hindi. webdunia.com
7. rajbhasha.gov.com
8.https://www.downtoearth.org.in
9.https://www.bhartyadharohar.com

Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

(54)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

'साहित्य, समाज और संस्कृति'
ई-विशेषांक

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

शोध-ऋतु

Open Or Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal
AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

ISSN-2454-6283 IMPACT FACTOR - (IIJIF-8.712)

02 March.-2023

अतिथि सम्पादक
प्रा.डॉ.संतोष येरावार,
प्रा.डॉ.व्यंकट खंदकुरे

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड़
तकनीकी सम्पादक
श्री.अनिल जाधव, मुंबई

ई-विशेषांक मार्गदर्शक
डॉ.मोहन खताळ,
डॉ.अनिल चिद्रावार

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

Web-www.shodhritu.com
Email-shodhrityu78@yahoo.com
-9405384672